Bahujan Literature and Criticism

बहुजन साहित्य और आलोचना

PRAMOD RANJAN

If you believe that literary criticism is aimed only at '"literature"' and that "thinking" contaminates it, then I have nothing to say to you, at least for now. Concepts like Black literature, Dalit literature and Bahujan literature are directly based on thinking and outlook. There is little doubt that literature is literature, just as the world is the world. But for humans, the world is not just the world. They have divided it into many parts on geographical, political, cultural and ethnic considerations so as to facilitate their life and to give it a meaning. In fact, division

प्रमोद रंजन

अगर आप मानते हैं कि आलोचना के लिए 'साहित्य एकमात्र साध्य होना चाहिए और 'विचार' उसे दूषित करता है, तो मुझे आपसे इस समय कुछ नहीं कहना है। ब्लैक साहित्य, दलित साहित्य, बहुजन साहित्य आदि अवधारणाएं सीधे तौर पर विचार या दृष्टिकोण पर आधारित हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि साहित्य, साहित्य होता है, जैसे, दुनिया, दुनिया होती है। लेकिन मनुष्य के लिए दुनिया सिर्फ दुनिया नहीं होती, वह इसका विभाजन भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नस्ली आदि अनेक आधारों पर करता है, ताकि उसे जीवन को जीने तथा उसे समझने में सुविधा हो। 'ज्ञान' इसी विभाजन से जन्म लेता

AS WE GO ON IDENTIFYING BAHUJAN LITERATURE, 'DWIJ' LITE RATURE WILL AUTOMATICALLY SHIFT TO THE MARGINS. BECAUSE, THE MAJORITY OF HINDI LITERATURE IS BAHUJAN LITERATURE

जैसे-जैसे हम बहुजन साहित्य को चिन्हित करते जाएंगे, द्विज साहित्य स्वतः हाशिए का साहित्य बनता जाएगा, क्योंकि हिंदी साहित्य का अधिकांश हिस्सा बहुजन साहित्य ही है

and wisdom are mutually interdependent. Otherwise, like for an animal, the world is just the world.

In fact, the division of literature is fundamental to criticism. How do we look at literature, how do we make distinctions between it, its characteristics, its importance, its objectives, its impact, from which angle can it be understood the best - shouldn't criticism answer all these questions? For quite some time now, Hindi literary criticism is not discharging this responsibility. Ramchandra Shukla, Ramvilas Sharma and later Namvar Singh and other eminent critics discharged this responsibility in their own times. The classification of Progressive literature, "Nayee Kahani," and so on were all born out of the discharge of this responsibility. But due to their 'Dwij' social background, these Hindi critics did not take cognizance of the literature of 'Shudras' and 'Atishudras' as a separate genre. They did not give a clear, distinct identity to this literature, whatever might have been the reasons.

That is why Dalit literature originated in Marathi and thence reached Shudra writers like Rajendra Yadav. Why was it not born in Hindi? We are aware of the existence of a distinct stream of OBC literature and of its literary congregations in Maharashtra but today, for the Hindi critics, it is nothing except an astounding but laughable concept. Why? Be that as it may, the concept of 'Bahujan literature' was born in the editorial department of *FORWARD* Press and the credit must go to our chief editor Ivan Kostka, critic and linguist Rajendra Prasad Singh and writer Premkumar Mani.

है। दरअसल, विभाजन और ज्ञान अन्योन्याश्रित हैं। अन्यथा पशु के लिए दुनिया सिर्फ दुनिया है। साहित्य का विभाजन ही 'आलोचना' के उत्स में है। हम किसी साहित्य को कैसे देखें, कैसे उसे दूसरों से अलगाएं और उसकी विशेषता, उसके महत्व, उसके उद्देश्य, उसके प्रभाव को कैसे समझें, किस कोण से उसका आस्वाद अधिक से अधिक ग्रहण किया जा सकता है- क्या यही बताना आलोचना का दायित्व नहीं है ? अरसे से हिंदी आलोचना इस दायित्व को नहीं निभा रही। रामचंद्र शुक्ल, रामविलास शर्मा और बाद में नामवर सिंह आदि कई आलोचकों ने इस दायित्व को अपने-अपने समय में निभाया। अनेक प्रकार के साहित्य की पहचान, प्रगतिशील आंदोलन आदि से लेकर नई कहानी आंदोलन तक के अनेक प्रकार के विभाजन, इसी आलोचकीय दायित्व की देन हैं। लेकिन, अपनी द्विज सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण हिंदी के इन आलोचकों ने शूद्रों और अतिशूद्रों के साहित्य को अलग से अपने आलोचकीय संज्ञान में नहीं लिया। साहित्य की अन्य धाराओं की तरह उन्होंने उसे स्वायत्त पहचान नहीं दी। कारण चाहे जो भी रहे हों।

इसी कारण हम दलित साहित्य को मराठी साहित्य से चलकर हिंदी में राजेंद्र यादव जैसे शूद्र लेखक के हाथों में आते देखते हैं। हिंदी में इसका जन्म क्यों नहीं हुआ? महाराष्ट्र में ही पिछले कुछ वर्षों में ओबीसी साहित्य की धारा और उनके सम्मेलनों का पता भी हमें मिलता है लेकिन आज हिंदी के आलोचकों के लिए यह आश्चर्यचकित करने वाली हास्यास्पद अवधारणा है, क्यों?

बहरहाल, 'बहुजन साहित्य' की अवधारणा का जन्म फारवर्ड प्रेस के संपादकीय विभाग में हुआ तथा इसका श्रेय हमारे मुख्य संपादक आयवन कोस्का, आलोचक व

ALL THE MAJOR MOVEMENTS IN HINDI LITERATURE—WHETHER IT WAS BHAKTI OR PROGRESSIVE MOVEMENT OR "NAYEE KAHANI" MOVEMENT—ULTIMATELY WENT ON TO BECOME THE 'MAINSTREAM' LITERATURE

हिंदी साहित्य के इतिहास में जो भी बड़े आंदोलन हुए चाहे वह भक्ति आंदोलन हों या प्रगतिशील आंदोलन, नई कहानी आंदोलन सभी 'मुख्य धारा' का साहित्य बने

The evolution of the concept was the outcome of the debate and discussions between us, which lasted for well over a year and a half. Firstly, it was Mr. Kotska who introduced me to this idea of his when I was appointed Editor (Hindi) of *FORWARD* Press in May 2011. Later, Rajendra Prasad Singh too came out with the concept of 'OBC literature'. But Prem Kumar Mani doggedly opposed this terminology and I too was not agreeable to the use of this term. I too was not agreeable to the use of this term. I preferred using the term "Shudra literature" rather than "OBC literature". The word 'Shudra' has its origins in culture and Hindu religion and there is a long literary tradition of Shudras and Atishudras in the Hindi belt.

Ultimately, we agreed on the umbrella term "Bahujan literature" and in the year April 2012, *FORWARD* Press published its first Bahujan Literature Annual. The publication was discussed and debated in many newspapers and magazines but while editing the Bahujan Literature Annual this year, I realized that perhaps we have failed to apprise Hindi litterateurs of the concept of "Bahujan literature".

WHAT IS BAHUJAN LITERATURE?

- Bahujan literature is a big umbrella, under which fall Dalit literature (For convenience's sake we can describe it as "Atishudra literature"), Shudra literature, Tribal literature and Women's literature. Terminologies, thoughts and viewpoints like Ambedkarite literature, OBC literature, etc. can be included in its internal discourse.

- In Hindi, the concept of Dalit literature has gained acceptance only over the last two decades. But there are two contradictions inherent in it. First, it has only been accepted as a marginal literary genre, which means that some "other literature" constitutes the mainstream. Communist writers call this other literature Progressive or People's literature. Whereas, Rajendra Yadav and all writers and supporters of Dalit literature insist that "what is not Dalit literature is 'Savarna literature'" Thus, according to them, the mainstream Hindi literature is 'Savarna literature'. On the other hand, the compositions of many 'Dwij' writers, a major part of the contents of which is dominated by their 'Dwij' consciousness, is also counted in Progressive literature. The second contradiction of Dalit literature is that it has been confined to the Scheduled Castes i.e. only the writings of persons born in one of the castes listed in the SC list of India's constitution are qualified to be described

भाषाविज्ञानी राजेंद्र प्रसाद सिंह तथा लेखक प्रेमकुमार मणि को है। यह पिछले लगभग डेढ वर्षों में हमारे बीच चले वाद-विवाद और संवाद का नतीजा था। सबसे पहले श्री कोस्का ने, जब मैं फारवर्ड प्रेस में मई, 2011 में संपादक(हिंदी) नियुक्त हुआ, मुझे अपने इस विचार से परिचित करवाया, बाद में राजेंद्र प्रसाद सिंह भी 'ओबीसी साहित्य' की अवधारणा लेकर सामने आए थे लेकिन प्रेमकुमार मणि ने इस शब्दावली का घनघोर विरोध किया था। मैं भी इस शब्दावली से सहमत नहीं था। मैंने हमेशा 'ओबीसी साहित्य' की जगह 'शूद्र साहित्य' कहने का प्रस्ताव रखा। 'शूद्र' शब्द संस्कृति और हिन्दू धर्म द्वारा प्रदत्त है तथा शूद्रों तथा अतिशूद्रों की एक लंबी साहित्यिक परंपरा भी हिंदी पट्टी में मौजूद रही है। अंततः हम 'बहुजन साहित्य' नाम की एक बड़ी छतरी के नाम पर सहमत हुए और वर्ष अप्रैल 2012 में फारवर्ड प्रेस ने पहली 'बहुजन साहित्य वार्षिकी' प्रकाशित की। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उस वार्षिकी की चर्चा हुई, लेकिन इस बार इस बहुजन साहित्य वार्षिकी का संपादन करते हुए मुझे महसूस हुआ कि हम हिंदी के साहित्यकों को इस अवधारणा के बारे में बताने में शायद असफल रहे हैं।

बहुजन साहित्य क्या है ?

- बहुजन साहित्य को उस बड़ी छतरी की तरह देखा जाना चाहिए जिसके अंतर्गत दलित साहित्य, (सुविधा के लिए इसे हम अतिशूद्रों का साहित्य भी कह सकते हैं) के अतिरिक्त शूद्र साहित्य, आदिवासी साहित्य तथा स्त्री साहित्य आच्छादित है। आम्बेडकरवादी साहित्य, ओबीसी साहित्य आदि जैसी अनेक शब्दावलियां, विचार, दृष्टिकोण इसके आंतरिक विमर्श में समाहित हैं।

- हिंदी में पिछले दो दशकों के दौरान दलित साहित्य की अवधारणा को स्वीकृति मिली है, लेकिन इसके दो बड़े विरोधाभास भी हैं। पहला, इसे यह स्वीकृति 'हाशिए के साहित्य' के रूप में मिली है, यानी मुख्यधारा में 'कोई और' साहित्य है। कम्युनिस्ट लेखक इस 'कोई और' साहित्य को प्रगतिशील/जनवादी साहित्य कहते हैं। जबकि राजेंद्र यादव समेत सभी दलित लेखकों और समर्थकों का मत है कि 'जो दलित साहित्य नहीं है, वह द्विज साहित्य है।' यानी, उनके अनुसार, हिंदी की मुख्यधारा का साहित्य 'द्विज साहित्य' है। दूसरी ओर, प्रगतिशील साहित्य के नाम पर अनेक ऐसे द्विजों के साहित्य की भी गणना की जाती है, जिनके लेखन के अंतर्वस्तु का बड़े भाग पर उनकी द्विज चेतना हावी रही है। दलित साहित्य का दूसरा विरोधाभास यह है कि वह सिर्फ अनुसूचित जाति तक सीमित रह गया है यानी जो जातियां भारतीय संविधान के अनुसार 'एससी' सूची में दर्ज हैं, उन्हीं में पैदा हुए लेखक का साहित्य दलित साहित्य होगा, यानी वह सिर्फ अतिशूद्र का साहित्य है, जिन्होंने अस्पृश्य होने की पीड़ा झेली है। शूद्र इससे बाहर हैं।

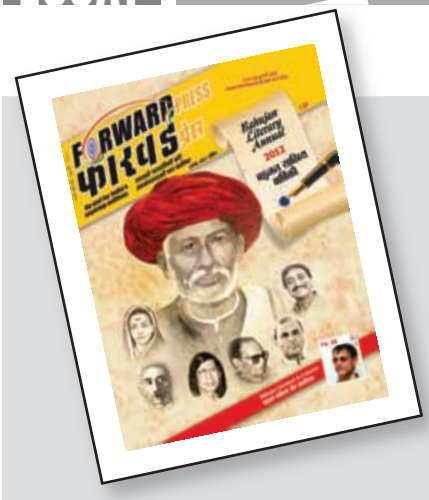

Firstly, it was Mr. Kotska who introduced me to this idea of his when I was appointed Editor (Hindi) of FORWARD Press in May 2011. Later, Rajendra Prasad Singh too came out with the concept of 'OBC literature'

सबसे पहले श्री कोस्का ने, जब मैं फारवर्ड प्रेस में मई, 2011 में संपादक (हिंदी) नियुक्त हुआ, मुझे अपने इस विचार से परिचित करवाया, बाद में राजेंद्र प्रसाद सिंह भी 'ओबीसी साहित्य' की अवधारणा लेकर सामने आए

as Dalit literature. This means that it is only the literature of the Atishudras, who underwent the agony of untouchability. Even the Shudras are out of its ambit.

- All the major movements in Hindi literature - whether it was Bhakti movement or Progressive movement or "Nayee Kahani" movement - ultimately went on to become "mainstream" literature. Does this not beg the question, despite its intellectual promise and its powerful pro-change thrust, why only Dalit literature was designated as marginal literature whilst 'Dwij' literature enjoyed the status of mainstream literature? Even if this does not smell of a conspiracy, shouldn't it make Dalit writers introspect and correct their conceptual mistakes?

- The foundation of Dalit literature lies are the thoughts of Kabir, Phule and Dr. Ambedkar. Of these , Kabir (weaver) and Jotiba Phule (gardener) were not Atishudras. They were Shudras and the communities they were born in are, today, constitutionally speaking, part of the OBC community. If we find many similarities in the writings of Kabir and Raidas can't we comprehend the differences thereof? Similarly, if there are similarities in the thoughts of Jotiba Phule and Ambedkar, there are ample differences too. The similarity between Atishudras, Shudras, tribals and women is that they all were victims of the Brahmanical system and they all struggled against it. This similarity, in the Indian context, places their literature in the category of Bahujan literature. The dissimilarities (which are evident not only in their values but also in their literary expressions) affords them the rationale to maintain a distinct identity of their own literature (Dalit literature, OBC literature, Tribal literature).

- The question of the growth of the concept of Bahujan literature is, in reality, the question of the growth of criticism in Hindi literature. As we go on identifying Bahujan literature, 'Dwij' literature will automatically shift to the margins. Because, the majority of Hindi literature is Bahujan literature. The need of the hour is to examine our literature from all possible angles. ■

- हिंदी साहित्य के इतिहास में जो भी बड़े आंदोलन हुए चाहे वह भक्ति आंदोलन हों या प्रगतिशील आंदोलन, नई कहानी आंदोलन सभी 'मुख्य धारा' का साहित्य बने। क्या यह एक प्रश्न नहीं बनता है कि अपनी बौद्धिक गुणवत्ता और विराट परिवर्तनकामी चेतना के बावजूद दलित साहित्य को क्यों 'हाशिए' के साहित्य के रूप में देखा गया और 'द्विज साहित्य' 'मुख्यधारा के साहित्य' की पदवी को इंज्वॉय कर रहा है। अगर अगर इसे षड्यंत्र नहीं मानें तब भी क्या यह तथ्य दलित लेखकों को अपने भीतर झांकने, अपनी अवधारणात्मक गलतियों को सुधारने के लिए नहीं उकसाता ?

- दलित साहित्य की नींव कबीर, जोतिबा फूले और आम्बेडकर के विचारों पर टिकी है। इनमें से कबीर (जुलाहा) और जोतिबा फूले (माली) अतिशूद नहीं थे बल्कि वे शूद्र परिवार में पैदा हुए थे, जो आज संवैधानिक रूप से ओबीसी समुदाय का हिस्सा है।

- हम कबीर और रैदास के साहित्य में अगर समानताएं मिलती हैं तो क्या पर्याप्त फर्क भी नहीं पाते ? इसी तरह, जोतिबा फूले और आम्बेडकर के चिंतन में अनेक समानताएं हैं तो अनेक फर्क भी हैं। अतिशूद और शूद्रों और आदिवासियों तथा स्त्रियों के बीच मुख्य समानता उन्हें ब्राह्मणवादी व्यवस्था द्वारा प्रताड़ित किए जाने तथा उसके विरुद्ध उनका संघर्ष है। यह समानता इनके साहित्य को भारत के संदर्भ में 'बहुजन साहित्य' के खाते में रखती है तथा असमानताएं (जो न सिर्फ जीवन मूल्यों में बल्कि उसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति में साफ तौर पर झलकती है) उन्हें अपने-अपने साहित्य (दलित साहित्य, ओबीसी साहित्य, आदिवासी साहित्य) को बनाए रखने का उचित एवं पर्याप्त आधार प्रदान करती है।

- बहुजन साहित्य की अवधारणा का विकास वस्तुतः हिंदी साहित्य की आलोचना के विकास का सवाल है। जैसे-जैसे हम बहुजन साहित्य को चिन्हित करते जाएंगे, द्विज साहित्य स्वतः हाशिए का साहित्य बनता जाएगा, क्योंकि हिंदी साहित्य का अधिकांश हिस्सा बहुजन साहित्य ही है। जरूरत इस बात की है कि हम कितने कोणों से अपने साहित्य को परखते हैं। ■